त्रिदिवसीय - अन्तर्राष्ट्रीय शोधसङ्गोष्ठी

Three Days-International Webinar

वैक्रमाब्द 2082

दिनाङ्क – 20-22 फरवरी, 2026

ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र के बहुआयामी स्वरूप :
परंपरा, विज्ञान और वैश्विक संदर्भ

**"Astrology and Vastu Shastra in Contemporary Discourse:
Traditional Roots, Scientific Perspectives, and Global Impact"**

आयोजक

महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउन्डेशन

एवं

ज्योतिष विभाग

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

कटनी (म.प्र.)

Contact - 8866774099

Email - mahakalastroscience@gmail.com

Website - www.mahakalastroscience.com

संस्थान परिचय एवं संगोष्ठी उद्देश्य

महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउन्डेशन, उज्जैन

महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउंडेशन, भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत ज्योतिष, खगोल, वास्तु, योग, कर्मकांड एवं संबंधित वैदिक विज्ञानों के शास्त्रीय अध्ययन, अनुसंधान एवं प्रसार हेतु समर्पित भारत सरकार से मान्यता प्राप्त एक अकादमिक एवं शोध-उन्मुख संस्था है। यह संस्था प्राचीन शास्त्रीय परंपरा और आधुनिक बौद्धिक दृष्टिकोण के समन्वय द्वारा ज्योतिष शास्त्र को वैज्ञानिक, तर्कसंगत और समाजोपयोगी अनुशासन के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रही है।

संस्थान का प्रमुख उद्देश्य वैदिक ग्रन्थों, जैसे - वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, सिद्धान्त एवं फलित ग्रंथों पर आधारित ज्योतिषीय ज्ञान को समकालीन सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत करना है, ताकि इसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक संतुलन एवं जीवन प्रबन्धन के क्षेत्रों में किया जा सके। वैदिक, फलित एवं खगोल आधारित ज्योतिष का सैद्धांतिक व प्रायोगिक शिक्षण वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों का आधुनिक भवन संरचना के संदर्भ में प्रशिक्षण कुंडली निर्माण, ग्रह-फल निर्धारण एवं समाधानात्मक अभ्यास पंचांग, मुहूर्त, नक्षत्र एवं दशा प्रणाली पर विशेष कक्षाएँ केस-स्टडी, लाइव प्रैक्टिकल एवं प्रश्नोत्तर सत्र शोधाभिमुख व्याख्यान, सेमिनार एवं कार्यशालाएँ ऑनलाइन दोनों माध्यमों से कक्षाएं नैतिक, शास्त्रीय एवं समाजोपयोगी दृष्टि से ज्योतिष-वास्तु शिक्षण प्रदान करता है । महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउंडेशन शोध, व्याख्यान, संगोष्ठी, कार्यशाला एवं शैक्षणिक संवाद के माध्यम से विद्वानों, शोधार्थियों एवं अध्ययनकर्ताओं को एक गंभीर एवं प्रमाणिक अकादमिक मंच प्रदान करता है। संस्था का दृष्टिकोण परंपरा के संरक्षण के साथ-साथ बौद्धिक विवेक, अनुसन्धान एवं वैश्विक संवाद को प्रोत्साहित करना है।

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय का उद्देश्य

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना प्रत्येक मानव के जीवन में वेदविज्ञान के सभी चालीस क्षेत्रों के विधानपूर्ण फल को समाहित करने के लिए हुआ है। हमारा लक्ष्य है कि आदर्शमानव, समस्या विहीन, रोगरहित, सुखी और धनधान्य से परिपूर्ण हो। आदर्श समाज का सृजन कर, आदर्श भारत का निर्माण हो। वेदभूमि, पुण्यभूमि भारत के दिव्यता के जागरण में समस्त विश्व के सुख और शान्ति के लिए मार्गप्रशस्त करना है।

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" इस स्मृति विचार का अनुसरण करते हुए महर्षि जी का कथन है कि 'छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्" अर्थात् मूल के नष्ट होने के पश्चात् न शाखा का अस्तित्व होता है और न पत्र का। वेदवेदांग रूपी वटवृक्ष के पोषण के लिए पूज्य महर्षि जी द्वारा 'यज्ञ भुवनस्य नाभिः' इस सिद्धांत का परिपालन करते हुए वैदिक यज्ञ अनुष्ठान को विश्वकल्याण के लिए सर्वदा हितकर शुभप्रदायक और मंगलप्रद बताया है। पूज्य महर्षि जी के दैवीय निदर्शन में 'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय' पञ्चविध यज्ञों के साथ विभिन्न प्रकार के अन्य यज्ञ भी निरन्तर किये जा रहे हैं।

संगोष्ठी का उद्देश्य

प्रस्तावित संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र को केवल परंपरागत विश्वास-प्रणाली के रूप में नहीं, बल्कि एक शास्त्रीय, तर्कसंगत और समाजोपयोगी ज्ञान-अनुशासन के रूप में स्थापित करना है। यह संगोष्ठी प्राचीन ग्रंथों में निहित सिद्धांतों, आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा समकालीन वैश्विक संदर्भों के बीच सार्थक संवाद और समन्वय को प्रोत्साहित करने का प्रयास करेगी।

इस संगोष्ठी के माध्यम से ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र के मानव जीवन, मानसिक संतुलन, स्वास्थ्य, सामाजिक संरचना, पर्यावरणीय सामंजस्य और सतत विकास से जुड़े विविध आयामों पर गंभीर अकादमिक विमर्श को मंच प्रदान किया जाएगा। साथ ही, इन शास्त्रों की अंतर्विषयी प्रकृति को रेखांकित करते हुए शिक्षा, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, पर्यावरण अध्ययन एवं आधुनिक तकनीक के साथ इनके संबंधों का विश्लेषण किया जाएगा।

संगोष्ठी का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्वानों, शोधार्थियों एवं विषय-विशेषज्ञों के बीच ज्ञान-विनिमय, शोध सहयोग एवं अकादमिक नेटवर्किंग को सुदृढ़ करना है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित अध्ययन को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई दिशा प्राप्त हो सके। अंततः यह संगोष्ठी परंपरा और आधुनिकता के संतुलन के माध्यम से समाज के समक्ष व्यावहारिक, नैतिक एवं सतत समाधान प्रस्तुत करने की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध होगी।

उपशीर्षक

- भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्योतिष एवं वास्तु का मूल आधार
- युवा पीढ़ी और भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्संपर्क
- वेद–ब्राह्मण–उपनिषद् परम्परा में खगोल, काल और दिशा-बोध
- सिद्धान्त ज्योतिष और आधुनिक खगोल विज्ञान : साम्य एवं भिन्नता
- नक्षत्र ज्योतिष : प्राचीन से आधुनिक
- आधुनिक फ्लैट संस्कृति और पारंपरिक वास्तु समाधान
- मोबाइल ऐप, ऑनलाइन कुंडली और डिजिटल युग का ज्योतिष
- पंचांग प्रणाली और आधुनिक समय-प्रबंधन विज्ञान
- वास्तु शास्त्र में पंचमहाभूत सिद्धांत और पर्यावरणीय विज्ञान
- ज्योतिष में गणितीय मॉडल, एल्गोरिद्म और डेटा संरचना
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ज्योतिष : संभावनाएँ और सीमाएँ
- वास्तु शास्त्र और सस्टेनेबल आर्किटेक्चर (Green Buildings)
- मानव स्वास्थ्य, बायोरिद्म और ग्रह-प्रभाव : अंतःविषय अध्ययन
- न्यूरोसाइंस, मनोविज्ञान और ज्योतिषीय व्यक्तित्व विश्लेषण
- भू-चुंबकीय क्षेत्र, दिशाएँ और वास्तु का वैज्ञानिक विश्लेषण
- डिजिटल पंचांग, मोबाइल एप्स और पारंपरिक ज्ञान का डिजिटलीकरण
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्योतिष एवं वास्तु की स्वीकार्यता
- अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन
- नैतिकता, जिम्मेदारी और वैज्ञानिक विवेक : आधुनिक ज्योतिष की चुनौतियाँ
- जलवायु परिवर्तन, खगोलीय चक्र और पारंपरिक भारतीय ज्ञान
- भारतीय ज्ञान परम्परा में ब्रह्माण्ड–मानव–प्रकृति का समन्वय मॉडल
- भविष्य की दिशा : भारतीय ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र का वैश्विक अकादमिक रोडमैप
- जातक स्कन्ध में फलकथन की विधियां
- जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय और शुभ मुहूर्त का महत्व
- कृषि, ऋतु चक्र और पारंपरिक ज्ञान
- वैश्विक स्तर पर भारतीय जीवन दर्शन की स्वीकृति
- विवाह, संबंध और सामञ्जस्य में ज्योतिष की भूमिका
- भारतीय ज्ञान परम्परा और विश्व
- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक विषय

शोधपत्र की परिसीमा–

संस्कृत/ हिन्दी/ अंग्रेजी भाषा में न्यूनतम शब्दसीमा १००० शब्द का शोधपत्र सारांश सहित अपेक्षित है। दिनाङ्क १५/०२/२०२६ तक शोधपत्र ई–मेल/व्हाट्स एप करने वाले शोधार्थियों को शोध सारांश वाचन में वरीयता प्रदान की जावेगी। देवनागरी में यूनिकोड/मंगल (१४ फॉण्ट) तथा रोमन में Times new roman (14 फॉण्ट) लिपियाँ स्वीकार्य हैं।

चयनित शोधपत्रों को पुस्तक रूप प्रकाशित किया जायेगा ।

पञ्जीयन शुल्क

सभी के लिये – ₹ ५०१

संगोष्ठी में भाग लेने हेतु पात्रता

प्रस्तावित संगोष्ठी ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र के शास्त्रीय, वैज्ञानिक एवं समकालीन आयामों में रुचि रखने वाले सभी गंभीर अध्ययनकर्ताओं, शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के लिए खुली है। इसका उद्देश्य विविध पृष्ठभूमियों से जुड़े विद्वानों को एक साझा अकादमिक मंच प्रदान करना है, जहाँ ज्ञान, अनुभव और अनुसंधान का सार्थक आदान–प्रदान संभव हो सके।

इस संगोष्ठी में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राध्यापक, सहायक एवं अतिथि शिक्षक; Ph.D., M.Phil. एवं स्नातकोत्तर स्तर के शोधार्थी; तथा ज्योतिष, वास्तु, खगोल, आयुर्वेद, दर्शन, संस्कृत, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संबंधित विषयों के विशेषज्ञ सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अकादमिक दृष्टिकोण से कार्यरत संस्थागत शोधकर्ता, स्वतंत्र विद्वान एवं विषय–विशेषज्ञ भी इसमें सहभागिता कर सकते हैं।

संगोष्ठी उन प्रतिभागियों का भी स्वागत करती है जो ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र को समाजोपयोगी, नैतिक और वैज्ञानिक संदर्भों में समझने व विकसित करने के इच्छुक हैं। प्रतिभागी शोध–पत्र प्रस्तुति, पैनल चर्चा, श्रोता अथवा संवादात्मक सत्रों के माध्यम से अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सकते हैं।

यह संगोष्ठी न केवल ज्ञान–विस्तार का अवसर प्रदान करती है, बल्कि अकादमिक संवाद, अनुसंधान सहयोग और बौद्धिक नेटवर्किंग के लिए भी एक सशक्त मंच उपलब्ध कराती है, जिससे विषयगत अध्ययन को नई दिशा और व्यापक दृष्टि प्राप्त हो सके। www.mahakalastroscience.com पर प्रवेश कर पञ्जीयन कर सकते हैं। गूगल फार्म https://forms.gle/jjoupqT9zo6QyLGk6 द्वारा पञ्जीयन करना होगा । भुगतान पावती एवं शोध पत्र मेल आई.डी. mahakalastroscience@gmail.com अथवा व्हाट्सएप क्रमांक ८८६६७७४०९९ पर दिनांक १८–०२–२०२६ तक भेजना अनिवार्य होगा।

स्थान – Online

सम्पर्क हेतु - व्हाट्स एप क्रमांक– ८८६६७७४०९९

गूगल फार्म भरने के लिये स्कैन करें –

For Registration

For Registration Fees

आयोजन समिति

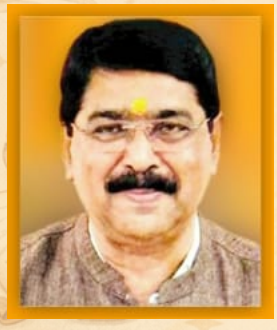

संरक्षक
प्रो. प्रमोद कुमार वर्मा
कुलगुरु, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी

संरक्षक
पं. दिवाकर मणि तिवारी
वेद एवं साहित्याचार्य
वडोदरा, गुजरात

मार्गदर्शक

प्रो.भारत भूषण मिश्र, आचार्य एवं अध्यक्ष - ज्योतिष विद्याशाखा, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर ।
प्रो. कृष्ण कुमार पाण्डेय, अधिष्ठाता - प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं मानविकी संकाय, क.कु.का.सं.वि., नागपुर ।
प्रो. श्यामदेव मिश्र, आचार्य, ज्योतिष विद्याशाखा, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर ।
प्रो. गिरिजाशंकर शास्त्री, आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, संस्कृत और भारतीय अध्ययन केंद्र , जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
प्रो. अशोक थपलियाल, सह आचार्य, वास्तु विभाग, श्री लालवहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।
प्रो. दिनकर मराठे, आचार्य वेदांग ज्योतिष विभाग, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर ।
प्रो. प्रभात कुमार मोहपात्रा, निदेशक – सदाशिव परिसर पुरी, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ।
प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, आचार्य, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,नई दिल्ली।
प्रो. प्रसाद गोखले, आचार्य वेदांग ज्योतिष, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर ।
प्रो. डॉ. नारायण प्रसाद गौतम, संस्कृत केन्द्रीय विभाग प्रमुख, त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाल ।
प्रो. सुरजीत मुखर्जी, अतिथि प्रो. न्यूक्लियर इंजीनियरिंग, ब्रनो यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, चेक, यूरोप ।
श्री त्रिविक्रम् रंगणाथन्, एम ई ऑटोमोटिव इन्जीनियरिंग, शोध विभाग, नूरंबर्ग, जर्मनी ।

संयोजक
डॉ. मृत्युञ्जय तिवारी
निदेशक
महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउन्डेशन

समन्वयक
प्रो. मानवेन्द्र पाण्डेय
विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी, म.प्र.

सह-संयोजक
डॉ. खुशेन्द्र देव चतुर्वेदी, सहायकाचार्य, ज्योतिष विभाग महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
डॉ. नेहा मिश्रा, विभागाध्यक्ष संस्कृत, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
श्री मनीष पाण्डेय, सहायकाचार्य, ज्योतिष विभाग- महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
समिति सदस्य- समस्त महाकाल एस्ट्रो साइंस फाउन्डेशन एवं विश्वविद्यालय परिवार